उत्तराखण्ड की प्राचीन ऐपण कला और रोजगार के अवसर

डा. सावित्री तड़ागी,

एसोसिएट प्रोफेसर/विभागाध्यक्ष (शिक्षा शास्त्र),
विद्यान्त हिन्दू पी.जी. कालेज, लखनऊ

पारम्परिक लहंगा–पिछौड़े के साथ ऐपण तैयार करती उत्तराखण्डी महिलायें

प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद से आज तक के सभी ग्रथों में, चाहे बौद्ध कालीन ग्रंथ हों, चाहे बाल्मीकी की रामायण हो, महाभारत, कालीदास का रघुवंश, वाणभट्ट का हरिश्चरित, भवभूति का हर्षचरित, भवभूति का उत्तर रामचरित या पाली प्राकृत अपभ्रंश किसी भी भाषा में लिखा गया ग्रंथ हो, सभी में चित्रकला का उल्लेख हुआ है। यह चित्रकला केवल मनोविनोद अथवा भौतिक विलास नहीं है, वरन सौंदर्य तत्व की खोज है। इसमें भाव व्यंजना की प्रधानता है और काव्य की भॉति इसका प्राण तत्व रस है, इसीलिए भारतीय कला प्राणवान एवं सजीव है। कलाओं में वातावरण का स्पष्ट प्रभाव पड़ता है। उत्तराखण्ड की पवित्रता भी उसकी लोक कलाओं में स्पष्ट झलकती है।

ऐपण शब्द का मूल अर्थ अल्पना, आलेखन और अर्पण में ढूंढने का प्रयास किया गया है। किन्तु महाकवि तुलसीदास ने दोहावली दोहा 454 में ऐपण शब्द का प्रयोग महिलाओं द्वारा घर की दीवार पर बनाये जाने वाले छापों के लिए किया है, जैसे

अपनो ऐपन निज हथा, तिय पूजहिं निज भीत।

फरइ सकल मन कामना, तुलसी प्रीत प्रतीत।

यह दोहा ऐपण शब्द की प्राचीनता, व्यापकता और उपयोगिता पर प्रकाश डालता है।

ऐपण का अर्थ लीपने से होता है और लीप शब्द का अर्थ अंगुलियों से रंग लगाना है। उत्तराखण्उ की पारम्परिक अमूल्य धरोहर लोककला ऐपण को मुख्य द्वार की देहली पर तथा विभिन्न अवसरों पर पूजा विधि अथवा अनुष्ठान के अनुसार देवी देवता के आसन, पीठ, भद्र आदि पर अंकित करते हैं। ऐपण हमारे हर त्योहार, शुभ अवसर, धार्मिक अनुष्ठान, नामकरण संस्कार, विवाह, जनेऊ आदि जैसे पवित्र समारोहों का एक अभिन्न अंग है। इस तरह के सभी कार्यो का प्रारम्भ ऐपण बनाने से किया जाता है।

अनुष्ठानिक चित्रकला का एक रूप ऐपण उत्तर भारत के एक राज्य उत्तराखण्ड की महिलाओं के हाथों विकसित किया गया था। अर्पण

शब्द का व्युत्पन्न या एक समर्पित भेंट, ऐपण कुमाऊँ क्षेत्र के धार्मिक संस्कारों से गहराई से जुड़ा हुआ है।

सम्पूर्ण भारत के विभिन्न क्षेत्रों में लोक कला को अलग–अलग नामों से जाना जाता है। जैसे बंगाल में अल्पना, उत्तर प्रदेश में चौक पूरना, गुजरात में रंगोली, मद्रास में कोलाम, राजस्थान में म्हारना और बिहार में मधुबनी नाम से जाना जाता है। धार्मिक अनुष्ठानों एवं संस्कारों से संबंधित क्षेत्रीय लोक कलाओं का महत्व सदियों से चलता आया है। विवाहोत्सव पर निर्मित कलाओं में बारीकियों का विशेष महत्व होता है। ऐपण भावनाओं का दर्पण होते हैं।

अल्पनाओं को प्रशिक्षण केन्द्रों में आबद्ध नहीं किया जा सकता है। मानवीय संवेदनाओं की अभिव्यक्ति होने के कारण इनकी बनावट में परिवर्तन की संभावना रहती है। अल्पनायें परम्पराओं से संबद्ध होती हैं, अतः इनके मौलिक रेखांकन में विशेष परिवर्तन नहीं किया जा सकता है। चूँकि अल्पनायें किसी क्षेत्र की लोक संस्कृति की परिचायक होती हैं अतः उनका मूलाधार यथावत् बनाए रखना उचित होता है। ये अल्पनायें पुरातन पीढ़ियों से उतरती हुई नवागत पीढ़ियों को विरासत के रूप में प्राप्त होती हैं।

वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी के इस युग में भी अल्पनाओं का महत्व कम नहीं हुआ है। हॉ, इसके रूप में परिवर्तन अवश्य हुआ है, क्योंकि हस्त निर्मित अल्पनाओं का मुद्रित रूप प्राप्त होने लगा है। इस नवीन प्रवृत्ति के कारण अल्पना निर्माण में मनोयोग और अल्पनाओं में वैविध्य की कमी दृष्टिगोचर हो रही है। अल्पनायें केवल रेखा चित्र मात्र नहीं होती हैं, बल्कि उनमें लोक जन–मानस से जुड़ी धार्मिक एवं सामाजिक परम्परायें तथा भावनायें जुड़ी रहती हैं।

उत्तराखण्ड ऐपण कला में कालांतर से चली आ रही मान्यताओं की अभिव्यक्ति परिलक्षित होती है। अतः इनमें तांत्रिक, मांत्रिक एवं यांत्रिक आस्थाओं के संकेत मिलते हैं। विदेशों में भी रेखाचित्र अंकन की परम्पराएं पायी जाती हैं। ये रेखा चित्र पुश्तैनी विरासत का रूप प्रदर्शित करते हैं। यूरोप में प्रेत बाधा को हटाने के लिए पौण्टाग्राम का प्रयोग किया जाता है। माना जाता है कि पंच भूत शक्तियॉ समन्वित कर ऋणात्मक ऊर्जा से मुक्ति पाई जा सकती है।

तिब्बत में दुरात्माओं से मुक्ति पाने के लिए धरती में चित्र खींच कर रेखा चित्रों का निर्माण किया जाता है, जिन्हें तिब्बती भाषा में किंलोर कहा जाता है। यहूदी धर्म में पंचकोणीय तारों का निर्माण किया जाता है जिनका उद्देश्य भी ऋणात्मक ऊर्जा के स्थान पर धनात्मक ऊर्जा का प्रतिस्थापन करना होता है। उन्हें यहूदी धर्म में सोलोमन की झील व डेविड का तारा कहा जाता है।

गढ़वाल की ओझा परंपरा एवं कुमाऊँ की जागर परम्परा धार्मिक आस्था के स्वरूप हैं। कहा जाता है कि एक व्यक्ति को पानी की तलाश थी, उसे एक घर में ककड़ी की बेल दिखाई दी। उसने मकान मालिक से उसका फल देने के लिए कहा, पर उसकी मॉग का कोई प्रभाव मकान मालिक पर नहीं हुआ। इस पर उस व्यक्ति ने घर की गृहणी से कुछ चावल के दाने मॉगे। घर की गृहणी से प्राप्त चावल के दाने हाथ में लेकर उन दानों को मुँह के पास लाकर उस व्यक्ति ने कुछ मंत्र पढ़े और ककड़ी की बेल पर फेंक दिये और चल दिया। ककड़ी की बेल भी उस व्यक्ति के पीछे–पीछे चल दी। इस उद्धरण का ऐपण कला से सीधा सम्बन्ध तो नहीं है, परन्तु परोक्ष सम्बन्ध अवश्य है, क्योंकि ऐपण कला में तांत्रिक, मांत्रिक संकेत अंकित किये जाते हैं। इतना अवश्य है कि आत्मक की शक्ति

(ऊर्जा) के महत्व को हर क्षेत्र में जुड़ी अल्पनाओं में स्वीकारा गया है।

कुमाऊँ की जागर परम्परा में देवी देवताओं एवं अन्य क्षेत्रीय देवताओं की आराधनायें शामिल होती हैं जिनमें भू–तत्व अर्थात चावल, जल तत्व एवं अग्नि तत्व का महत्व माना जाता है। ऐपण कला आकृतियों का प्रभावित करने वाली तांत्रिक, मांत्रिक परम्पराओं की अनेक विधियॉ हैं, जिनका विवरण यहॉ देना प्रासंगिक नहीं होगा।

सर जॉन वुडराफ के अनुसार – मध्यकालीन हिन्दू धर्म बहुत अंशों में तांत्रिक है। प्रचलित और गूढ़ दोनों हिन्दू धर्मों में तंत्र विद्या का काफी समावेश है। तंत्र वह धर्मशास्त्र है जिसके सम्बन्ध में यह कहा जाता है कि शिव ने कलियुग के विशिष्ट शास्त्र के रूप में इसे प्रस्तुत किया है।

यहॉ यह प्रस्तुत करना इसलिए आवश्यक है क्योंकि पूरे उत्तराखण्ड में शिव और शक्ति की पूजा होती है, अतः इनका ऐपणों से सीधा सम्बन्ध है। ऐपण कला में अनेक चिन्हों का उपयोग होता है, पर उनमें कुछ प्रमुख तिलक, मंगल कलश, स्वास्तिक, शंख, ऊँ, दीपक आदि हैं।

इनमें स्वास्तिक ऐसा चिन्ह है जिसे भारत की अल्पनाओं में अधिकांशतः उपयोग में लाया जाता है। समष्टि के द्योतक अनेक प्रतीक चिन्हों में प्रतीक उद्धृत किए जाते हैं। डमरू और त्रिशूल शिर्वाचन के प्रतीक हैं। ऊँ, शंख और घण्टी शक्ति साधना के उपादान हैं। ऊँ परमब्रह्म त्रिदेव शक्ति का प्रतीक है। स्वास्तिक विघ्नहर्ता का प्रतीक है जो कल्याणकारी, शुभ भावना से पूर्ण एवं अस्तित्व का परिचायक है। मयूर एवं कमल वाग्देवी (मॉ सरस्वती) और कमलासन (लक्ष्मी) के प्रतीक हैं। तोता प्रकृति का प्रतीक है और तिलक को धर्मदात्री (पृथ्वी) का प्रतीक माना गया है। ऐपण में भी इनके अनुरूप आस्थाएं निहित होती हैं।

ऐपण निर्माण में प्रयुक्त सामग्री से अधिकॉश उत्तराखण्डी जनमानस परिचित है। इनमें गेरू और बिस्वार (पिसे चावल का घोल) मुख्य हैं। समय के अनुसार ऐपण कला में रंगीन एवं रेखिकीय कला में आंशिक परिवर्तन हुए हैं पर उनकी आकृतियॉ मूल आकृतियों के अनुरूप ही बनी रही हैं। इनमें दशहरा (द्वारपट्ट) या द्वारपट्टा एक उदाहरण है।

चूँकि इसमें रोली, कुमकुम, चावल और अष्टगंध का प्रयोग होता है अतः अल्पनाओं का मूल धर्म ही है। धर्म का कोई पक्ष हो सकता है जो मानव आस्था पर आधारित हो। अल्पना संस्कृति में द्वारपट्टा ऋणात्मक शक्ति के प्रभाव का निवारण करता है।

कृषि और प्रकृति से मानव का अटूट संबंध रहा है। इस दृष्टि से मानव का प्रकृति से सदैव का नाता बना रहा है। वैसे भी उत्तराखण्ड का जीवन कृषि, पशुपालन और सीमा प्रहरी से जुड़कर प्रकृति के वरदहस्त से पलता रहा है।

उत्तराखण्ड शैव/शिव क्षेत्र होने की दृष्टि से यहॉ वायु तत्व की प्रधानता रही है। जिसमें शिव गणादि के पूजा कार्य की प्रधानता रही है। शक्ति क्षेत्र होने के नाते यहॉ मनसा देवी (सर्प से रक्षा करने वाली देवी) और शीतला देवी (छोटी माता की देवी) के रूप में आधारित रही है।

शक्ति की आराधना के लिए उनका आसन स्थापित करना आवश्यक होता है। पीठ देवी देवताओं का आसन माना जाता है। इसलिए उत्तराखण्ड की ऐपण निर्माण कला में सरस्वती पीठ, देवी पीठ, लक्ष्मी पीठ, शिव शक्ति पीठ आदि का निर्माण किया जाता है।

उत्तराखण्ड में कृषि पर निर्भरता होते हुए भी कृषि उत्पादों का अंकन अल्पनाओं में कम परिलक्षित होता है। संभवतः देवी देवताओं के

सापेक्ष कृषि पक्ष को प्रधानता नहीं मिल पाई है। विज्ञान एवं प्रौद्यौगिकी के इस युग में ऐपण कला उपेक्षित हुई है और नई पीढ़ी से श्रमसाध्य कार्य मानने लगी है।

कला और प्रौद्यौगिकी दो अलग पक्ष हैं। एक चैतन्य से जुड़ा है और दूसरा यांत्रिक जड़ता से जुड़ा हुआ है। दोनों प्रवृत्तियों में भेद करने की आवश्यकता है, तभी ऐपण कला जीवित रह पायेगी।

उत्तराखण्ड के पहाड़ी क्षेत्रों में किसी त्यौहार या शुभकार्य के सुअवसर पर भूमि और दीवार पर चाल के बिस्वार (पिसे चावल का घोल), गेरू (प्राकृतिक लाल मिट्टी या लाल खड़िया), हल्दी, जौ, पिठ्यॉ (रोली) से बनाई गई आकृति, जिसे देख मन मस्तिष्क में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है और सकारात्मक शक्तियों के आह्वान का आभास होता है, वह उत्तराखण्ड की पारम्परिक और पौणाणिक लोक कला ऐपण है। ऐपण कला का इतिहास अनन्त है। ऐसा माना जाता है कि कुमाऊँ की प्रसिद्ध लोक कला ऐपण, पौराणिक काल से चली आ रही है। इस कला का तंत्र, मंत्र व आध्यात्म से जुड़ाव है। उत्तराखण्ड के कुमाऊँ क्षेत्र में शुभ अवसरों पर तथा त्योहारों व संस्कारों पर अपने घरों के मुख्य द्वार और मंदिर को सजाने की परम्परा पौराणिक रही है। इन जगहों को सजाने के लिए भीगे चावल पीस कर (जिन्हें बिस्वार कहते हैं) और गेरू, लाल मिट्टी का प्रयोग किया जाता रहा है। वर्तमान में गेरू और बिस्वार की जगह लाल और सफेद आयल पेंट ने ले ली है, परन्तु ऐपण कला वही है और इसका महत्व कम नहीं हुआ है।

ऐपण कला पारम्परिक कला है, इसे सीखने के लिए किसी स्कूल या संस्थान में जाने की आवश्यकता नहीं पड़ती। बल्कि इसे एक पीढ़ी अपनी आने वाली पीढ़ी को एक धरोहर के रूप में सिखाती है। एक मॉ अपने बच्चों को मदद कराने के बहाने, धीरे धीरे ये कला सिखाती है। जब वह इस कला में पारंगत हो जाते हैं तो पूरा कार्यभार उनके ऊपर छोड़ देती है। इस प्रकार पीढ़ी दर पीढ़ी यह कला चली आ रही है।

ऐपण कला उत्तराखण्ड के कुमाऊँ मण्डल की विशिष्ट पहचान है, जो पुरातन और पौराणिक है। इस कला के माध्यम से देवी देवताओं का आह्वान किया जाता है। या यूँ कहा जा सकता है कि ऐपण में रेखांकित किये गये चित्र सकारात्मक शक्तियों के आह्वान के लिए बनाए जाते हैं। कुमाऊनी संस्कृति में अलग अलग मंगल कार्यों और देव पूजन हेतु अलग–अलग प्रकार के ऐपण बनाए जाते हैं जिससे यह सिद्ध होता है कि ऐपण एक साधारण कला या रंगोली न होकर एक आध्यात्मिक कार्यों में योगदान देने वाली महत्वपूर्ण कला है, जिसके प्रमुख रूप निम्न प्रकार हैं:–

क्रमॉक	ऐपण का नाम	विशेषता
1	वसोधरा ऐपण	यह ऐपण मुख्यतः घर की सीढ़ियों, देहली, मंदिर की दीवारों तथा तुलसी के पौधे के गमले या मंदिर, ओखली और हवन कुंडों में उकेरे जाते हैं। देहली पर वसोधरा ऐपण आदर और खुशहाली का प्रतीक माना जाता है।
2	भद्र ऐपण	भद्र ऐपण प्रायः दरवाजों की देली पर तथा मंदिरों की बेदी पर अंकित किए जाते हैं। मंदिरों की बेदी पर बारह बूंद भद्र ऐपण काफी लोकप्रिय है।

3	दीवार ऐपण	यह ऐपण दो भागों में विभाजित होती है। पहली रसोई में ''माता और लक्ष्मी नारायण'' दूसरी जहॉ धार्मिक अनुष्ठान किए जाते हैं।
4	कपड़े में बनाये जाने वाले ऐपण	कुछ ऐपण कपड़े में भी बनाये जाते हैं। जैसे खोड़िया चौकी, पिछौड़े (ओढनी) में और शिव पीठ, पीले कपड़े में बनाई जाती है। इसका प्रयोग धार्मिक अनुष्ठानों में किया जाता है।
5	लकड़ी की चौकी	यह उपासना के आसन होते हैं जो देवताओं के लिए विभिन्न अवसरों पर प्रयोग किए जाते हैं।
6	नवदुर्गा चौकी	यह चौकी देवी पूजन के लिए प्रयोग की जाती है। यह तीन क्षैतिज और ऊर्ध्वाधन रेखाओं के चित्रों द्वारा बनाई जाती है जिसके मध्य में स्वास्तिक का चिन्ह बनाया जाता है। इस चौकी की मुख्य बात यह है कि इसमें नौ बिन्दु होते हैं, जो नव दुर्गाओं को प्रदर्शित करते हैं।
7	आसन चौकी	यह बहुत से अवसरों में प्रयुक्त होती हैं। यह चौकी एक जोड़ा होता है जो उपासक और उसकी पत्नी के लिए होता है।
8	चामुण्डा हस्त चौकी	इस चौकी का प्रयोग हवन और योग के लिए होता है, जिसमें दो त्रिकोण और दो विकर्ण रेखायें एक साथ जुडी होती हैं। मध्य में एक सितारा होता है जो एक वृत्त से बन्द होता है। मध्य के रिक्त स्थान में फूल या लक्ष्मी के पैर बनाये जाते हैं। इसका मध्य भाग प्रायः आठ कमल की पंखुडियों से सजाया जाता है।

9	सरस्वती चौकी	सरस्वती विद्या की देवी हैं। जब एक बच्चा औपचारिक शिक्षा के लिए तैयार होता है, तब उसके शुभारम्भ के लिए एक पूजा का आयोजन होता है। इस पूजा का मुख्य बिन्दु सरस्वती चौकी होती है। इसमें एक सितारा होता है, जिसके पॉच कोने होते हैं। इसके मध्य स्वास्तिक, फूल या दीपक बना होता है।
10	जनेऊ चौकी	यह चौकी जनेऊ संस्कार के लिए प्रयुक्त होती है। इसके मुख्य भाग में छःपक्षीय चित्र के भीतर सात सितारे होते हैं जो सप्तऋषि को प्रदर्षित करते हैं।
11	शिव या शिवचरण पीठ	शिव की पूजा मुख्यतः सावन और माघ के महीनों में की जाती है। इस पीठ में आठ कोणों को डिजाइन होता है जो बारह बिन्दु और बारह रेखाओं से जुडा होता है।
12	सूर्यदर्शन चौकी	यह चौकी नामकरण संस्कार में काम आती है। 11 दिन तक नवजात शिशु को अन्दर रखा जाता है। 11वें दिन सूर्य दर्शन के लिए बच्चे को बाहर लाया जाता है। यह चौकी ऑगन में बनाई जाती है जहॉ पंडित मंत्र पढते हैं।
13	स्यो एपेण	स्यो एपेण एक ज्यामितीय नमूना होता है जो बच्चे को बुरी आत्माओं से बचाता है। यह बच्चे के जन्म के 11वें दिन बनाई जाती है।
14	धूलि अर्घ्य चौकी	यह चौकी मुख्यतः दूल्हे के स्वागत के लिए दूल्हन पक्ष द्वारा तैयार की जाती है। पूर्व में दूल्हा गोधूलि के समय सायं विवाह स्थल पर पहुॅचता था। विवाह के दिन दूल्हे को नारायण का रूप माना जाता है। इसलिए दुल्हन के पिता पूजा से पूर्व दूल्हे को धुलि अर्घ्य चौकी में खड़ा करके उसके पैर धुलवाते हैं।
15	ज्यूति/मात्रिका पट्टा	कुमाऊॅ में विशेषतः ब्राहम्ण, क्षत्रिय और साह परिवारों के मध्य इसका प्रचलन है। यह उस कमरे में बनाई जाती है जहॉ धार्मिक समारोह अथवा अनुष्ठान होते हैं। स्थानीय भाषा में इसका नाम ज्यूति है। इस पट्टे में महामात्रिका, महालक्ष्मी, महासरस्वती, महा काली चित्रित होती हैं।

16	दुर्गा थापा	यह ऐपण मुख्यतः कुमाऊँ की महिलाओं के द्वारा कागज में बनाया जाता है जो काफी कठिन होता है। इसमें मॉ दुर्गा शेर पर विराजमान होती हैं।और साथ में स्थानीय देवी देवता बनाये जाते हैं।
17	लक्ष्मी यंत्र	यह प्रायः दीपावली में उस स्थान पर रखा जाता है जहॉ मॉ लक्ष्मी की पूजा की जाती है।
18	कृष्ण जन्माष्टमी पट्टा	यह पट्टा मुख्यतः भगवान कृष्ण के जन्मदिन श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर उनकी पूजा हेतु बनाया जाता है।

ऐपण कलाकृतियों के कुछ नमूने निम्न प्रकार हैं:–

लक्ष्मी चौकी

शिर्वाचन चौकी

पूजाथाल ऐपण

जनेऊ ऐपण

शिव परिवार (डिकारे)

स्वास्तिक ऐपण

वसुधारे ऐपण

हवन चौकी

सूप पर ऐपण

वेदी ऐपण

लक्ष्मी पग ऐपण

उपरोक्त ऐपणों को पूजा पाठ, जनेऊ संस्कार एवं विवाह संस्कारों में प्रयोग किया जाता है। बिना लक्ष्मी के पगचिन्हों के ऐपण अधूरे माने जाते हैं। ऐपण कला कपड़ों पर भी की जाती है। रंग्वाली पिछौड़ा मुख्यतः उक्तराखण्ड कुमाऊँ की पहचान है। पहले यह पिछौड़ा सफेद कपड़े को हल्दी के रंग से रंगने के उपरान्त उस पर रोली आदि से अल्पना लेखन किया जाता था। वर्तमान में रंग्वाली पिछोड़े के अतिरिक्त ऐपण साड़ी व अन्य परिधान भी उपलब्ध होने लगे हैं।

रोजगार सृजन

उत्तराखण्ड की लोककला को सहेजने के लिए कुमाऊँ में दीपावली या अन्य शुभ अवसरों पर ऐंपण बनाने की मान्यता सदियों से चली आ रही है। यही वजह है कि यहॉ के लोगों ने सदियों पुरानी लोक कलाओं को आज भी जीवित रखा है, जिसे आगे बढाते हुए अनेक प्रयोग किए जा रहे हैं। अब कुमाऊँ की प्रतीक ऐंपण कला की साडियॉ भी मिलने लगी हैं। पिथौरागढ के जिलाधिकारी डा. आशीष चौहान के स्थानीय कला और उत्पादों को विशेष पहचान दिलाने की पहल करने के बाद यहॉ ऐंपण के डिजाइन से साडियॉ तैयार की गई है जिसे ''**हिलांस ऐपण साड़ी**'' नाम दिया गया है। ऐपण से सजी इस साड़ी का

डिजाइन दीपिका चंद ने तैयार किया है। वह पिथौरागढ जिले की रहने वाली हैं और लम्बे समय से ऐंपण पर कार्य कर रही हैं। उन्होंने भविष्य में अन्य परिधानों में भी ऐपण कला के डिजाइन देने की बात की है। दीपिका चंद ने उम्मीद जताई है कि ऐंपण साड़ी के माध्यम से स्थानीय स्वयं सहायता समूह की महिलाएं व्यावसायिक उत्पादन के लिए प्रोत्साहित होंगी। साथ ही स्थानीय ऐंपण कलाकारों को भी रोजगार का एक नया माध्यम मिल सकेगा।

एकीकृत आजीविका सहायता परियोजना के प्रोजक्ट मैनेजर कुलदीप बिष्ट ने बताया है कि जल्द ही ऐंपण के क्षेत्र में काम कर रही महिलाओं का एक समूह बनाकर ऐंपण साडी के माध्यम से आय के नए आयाम विकसित किए जाने पर काम किया जा रहा है। ऐंपण साडी की बढती मॉग को देखकर जल्द ही व्यावसायिक स्तर पर इसका उत्पादन कर ''हिलांस'' नाम के ब्राण्ड से यह साडियों बाजार में उपलब्ध हो जाऐंगी।

साड़ियों के अतिरिक्त उत्तराखण्ड हस्तशिल्प एवं हथकरघा बोर्ड के प्रयासों से प्रदेश के कई हस्तशिल्पी व कला प्रेमी युवाओं के लिए यह रोजगार का माध्यम बन गया। स्टेशनरी, फाइल कवर, फोल्डर पेन स्टैण्ड, बैग, दुपट्टे, बैग, पूजा की थाली, नेमप्लेट, चाबी का छल्ला, टी–कोस्टर समेत अन्य कई उत्पादों को ऐपण प्रिन्ट से तैयार किया जा रहा है। ऐपण कला के इन उत्पादों की बाजार में खासी मॉंग है।

ऐपण गर्ल, उत्तराखण्ड के नाम से ख्याति प्राप्त मीनाक्षी खाती, छुई गॉव, रामनगर का कथन है कि बचपन से ही वह ऐपण कला को देखती आई हैं। ऐपण उत्पादों की मॉग काफी हे। ऐपण डिजाइन के टी कोस्टर, पूजा की थाली, नेम प्लेट, चाबी के छल्ले आदि वह बना रही हैं। दुपट्टे व टी शर्ट पर ऐपण डिजाइन की डिमांड आ रही है। उनका कथन है कि प्रदेश सरकार व पर्यटन विभाग की ओर से माननीयों व अतिथियों के सम्मान में दिये जाने वाले स्मृति चिन्ह का आर्डर मिले तो इस व्यवसाय को अधिक बढावा मिल सकता है। इसके अतिरिक्त पूजा पडियार, मंजू टमटा, प्रेमा तिवारी आदि महिलाओं ने विभिन्न संचार माध्यमों यथा– फेसबुक एवं यू–ट्यूब और प्रदर्शनियों – आदि के माध्यम से न केवल हस्तकला का प्रचार एवं प्रसार किया जा रहा है अपितु स्वरोजगार का अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

रंग्वाली पिछौड़ा

ऐपण साड़ी

कुशन कवर

चाय ट्रे

कपड़े में बनी गणेश लक्ष्मी चौकी

श्री सुधीर चन्द्र नौटियाल, निदेषक, उद्योग विभाग, उत्तराखण्ड का कथन है कि ऐपण डिजाइन की बाजार में मॉग बढ रही है। ऐपण डिजाइन से तैयार उत्पादों को काफी पसंद किया जा रहा है। यहॉ तक कि नए बन रहे भवनों की दीवारों पर टेक्चर की जगह ऐपण को लगाया जा रहा है। युवाओं को प्रषिक्षण व नए डिजाइन बनाने के लिए हल्द्वानी व अल्मोडा हब के रूप में विकसित हो रहे हैं। ऐपण उत्पादों को राष्ट्रीय स्तर पर बढावा दिया जा रहा है। युवाओं के लिए ऐपण कला रोजगार का साधन बन रही है। उत्तराखण्ड सरकार द्वारा सरकारी कार्यालयों की नाम पट्टिका आदि में ऐपण कला का प्रयोग कर राजकीय प्रोत्साहन प्रदान किया रहा है। महिलाओं के अतिरिक्त पुरूष वर्ग द्वारा भी इस कला का उपयोग स्वरोजगार, कुटीर उद्योग आदि के रूप में किया जा रहा है । इस प्रकार नवीन षिक्षा नीति के अन्तर्गत उत्तराखण्ड सरकार द्वारा प्राचीन एवं पारम्परिक ऐपण कला को रोजगार सृजन का नया माध्यम विकसित किया जा रहा है।

संदर्भ

- अल्मोड़ा बुक डिपो द्वारा प्रकाषित पुस्तक 'हिमवान' (लेखक–श्री कौषल किषोर सक्सेना)।
- अल्मोड़ा बुक डिपो द्वारा प्रकाषित पुस्तक 'हमारे स्वाद और हमारे संस्कार (लेखक–जैनू जोषी)।
- श्री लक्ष्मी भंडार अल्मोड़ा द्वारा प्रकाषित पुरवासी के 2017 में छपे 38वें अंक से साभार।

- अंकित प्रकाष, हल्द्वानी से प्रकाषित पुस्तक 'उत्तराखण्ड की लोक कलायें एवं षिल्प कौषल (लेखक–डा. डी.डी. षर्मा)।
- Support Kafal Tree
- पिथौरागढ जिला प्रशासन का लिंक पेज https://www.gnttv.com/offbeat/story/aipan-saree-got-launched-aipan-art-symbol-uttarakhands-culture-428819-2022-07-26
- ऐपण गर्ल, मीनाक्षी खाती की ऐपण कार्यषाला।
- aipan art essay
- कुमाऊँ की लोक कला–डा. करूणा पाण्डे ''पुस्तक संस्कृति''।